RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

# पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 25 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 25 नवम्बर 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

व्यवहार में ही संस्कृति के दर्शन

अभी भारत के रास्ते ही घाटी पर उतरते हैं। नेपाल की ओर से मार्ग निर्माण का कार्य जारी है।

# शीतकाल : घाटी में उतरे

## तिंकर, छांगरू निवासी भारत के रास्ते घरों को जाते हैं

### सीमा क्षेत्र में आपसी सूझबूझ और रोटी-बेटी का रिश्ता बरकरार

**कार्यालय प्रतिनिधि**

धारचूला। शीतकाल प्रवास के लिये उच्चहिमालयी क्षेत्र से लोग घाटी पर उतर चुके हैं। परम्परागत रूप से माइग्रेशन पर आवत-जावत करने वालों की बड़ी संख्या नवम्बर शुरु में ही घाटी में उतर आई थी और चरवाहे यात्रा पड़ावों पर भी निकल पड़े हैं। कुटी से आने वाले दल में बड़ी संख्या में लोग पहले ही आ गये थे, इनकी अगुवाई के लिये धारचूला में साथी उपस्थित थे।

सीमान्त क्षेत्र की संस्कृति के दर्शन इन यात्रियों के व्यवहार में होते हैं। सीमा क्षेत्र नेपाल-भारत के बीच रोटी-बेटी के रिश्ते बहुत साफ दिखाई देते हैं। नेपाल के तिंकर, छांगरू निवासी भारत के रास्ते ही अपने घरों को लौटते हैं। अब नेपाल के प्रहरी अपनी ओर से भी आवागमन को मार्ग तैयार कर रहे हैं।

बताते चलें कि माइग्रेशन के लिये व्यास और दारमा घाटी के लोग नीचे उतरते हैं। चौंदास घाटी में आस-पास ही रहते हैं। उधर जोहार घाटी के माइग्रेशन परिवार भी अपने नियत समय पर उतर आये हैं। नीती-माणा घाटी में तो एकसाथ आने-जाने का रिवाज है। वर्तमान में स्थितियां बहुत बदली हैं लेकिन अभी तक भी जो लोग अपने मूल घरेलू कुटीर उद्योग, कृषि, पशुपालन से जुड़े हैं वह प्रकृति के बीच तालमेल बनाते हुए परम्परा बनाए हुए हैं।

वयोवृद्ध सामाजिक कार्यकर्ता महिमन सिंह ह्यांकी बताते हैं कि तिब्बत व्यापार के समय नेपाल होते हुए भी जाते थे लेकिन सन् 1962 के युद्ध के बाद स्थितियां बदलीं। व्यास घाटी वालों की बहुत जायजाद नेपाल क्षेत्र में थी। बन्दोबस्त के समय तय हुआ कि लालपुर्जा यानी नेपाली नागरिकता होने पर ही लाभ मिल पायेगा। ऐसे में काफी लोग आपसी रजामन्दी से अपने मित्रों के पास अपनी जायजात छोड़ आए या बेच दी। नाभी, तिंकर, छांगरू आदि में शौका लोग रहते हैं। इनके बीच बराबर सम्बन्ध हैं और दोनों देशों की ओर से शादी-विवाह इत्यादि में निमंत्रण चलते हैं।

88 वर्षीय श्री ह्यांकी को कैलास मानसरोवर यात्रा सहित 3 बार तिब्बत व्यापार में जाने का अनुभव है। वह कहते हैं कि भारत-तिब्बत व्यापार बन्द के बाद से स्थितियां बदली हैं लेकिन नेपाल के साथ बराबर सम्बन्ध है। इन सम्बन्धों को आपसी सूझबूझ के साथ हमेशा आगे बढ़ाया जाना चाहिये।

# अंतर्राष्ट्रीय जौलजीवी मेला

## काली-गोरी के संगम पर जारी है उत्सव-तरंग

**पि.हि. प्रतिनिधि**

जौलजीवी। भारत-नेपाल सीमा पर काला-गोरी नदी के संगम पर ऐतिहासिक जौलजीवी मेले का उत्सव जारी है। सीमा आर-पार मेले को लेकर चहल-पहल है और दूर-दराज से व्यापारी उम्मीदों के साथ अपने उत्पादों को सजाकर बैठे हैं।

मेले का उद्घाटन मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने करते हुए जौलजीवी मेले को अनमोल धरोहर बताया। उन्होंने कहा कि यह मेला भारत और नेपाल के आर्थिक सम्बन्धों को बढ़ाने का काम कर रहा है। उन्होंने 29.65 करोड़ की 13 योजनाओं का लोकार्पण और 34.72 करोड़ की 5 योजनाओं का शिलान्यास किया।

लगभग एक महीने तक लगने वाले इस मेले में स्थानीय और बाहर से व्यापारियों की दुकानें सजी हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की चाल बनी हुई है। क्षेत्रीय विधायक हरीश धामी ने सभी को मेले की शुभकामनाएं देते हुए इस प्राचीन परम्परा को बनाए रखने में सहयोगी बनने को कहा। इस मौके पर व्यापार संघ अध्यक्ष धीरु धर्मशक्तू, लीला बंग्याल, शकुन्तला दताल, दिनेश वर्मा, संजय जंग, भूपी चन्द, विक्रम पाल आदि थे।

### कभी ऊनी कारोबार से निर्मित सामग्री और अपने जानवरों के साथ सीमान्त के व्यापारी आते थे

**श्रीराम सिंह धर्मशक्तू**

ऐतिहासिक मेला जो प्रत्येक वर्ष गोरी नदी काली नदी के संगम पर वर्षों से आयोजन किया जाता है और इस शुभ अवसर पर हमारे प्रदेश के श्री पुष्कर लसह धामी जी मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड सरकार और क्षेत्रीय विधायक श्री हरीश धामी जी के कर कमल के द्वारा उद्घाटन समारोह देखने का शुभ अवसर मिला। यह ऐतिहासिक मेला सदियों से सन 1914 से प्रति वर्ष मनाते आ रहे हैं जो एक पूरे देश में विश्व में उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत है। भारत नेपाल मित्रता बेटी रोटी का रिश्ता भी है। समस्त क्षेत्र के विशेषकर हमारे जोहार घाटी के लोग मेले में अपने ऊनी कारोबार से निर्मित सामग्री और अपने जानवरों के साथ मुनस्यारी से पैदल चलकर के पहुँचते थे जो आज धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं और बाहर से व्यापारियों का आना प्रारम्भ हो रहा है। धारचूला के लोगों ने कृषि उत्पादन जड़ी बूटी और स्थानीय सामान की बिक्री हेतु यहाँ पहुँच कर परम्परा को बनाया हुआ है। एक जमाना था जब मात्र जोहार घाटी के शौक व्यापारी और

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

# नैनीताल में गांधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तल्लीताल डांट पर स्थित मूर्ति को ताकुला गाँव में स्थानान्तरित करने और इसके स्थान पर सड़क के बीच में गांधी जी की बैठी हुई सूत कातती मुद्रा की मूर्ति के स्थापित किये जाने का जनता द्वारा जबर्दस्त विरोध किया गया। इसके बाद प्रशासन ने अपनी इस योजना पर विचार किया है।

दरअसल रोड चौड़ीकरण व सुविधा का हलावा देते हुए प्रशासन नैनीताल में यह सब करने की योजना बना चुका था लेकिन शहर में जिन्दगी बिता चुके लोगों ने सवाल किया कि जब नैनीताल में नैनीताल जैसा ही नहीं होगा तो लोग किस नैनीताल को देखने आएंगे। यह सत्यता भी है कि नैनीताल पर्यटकों को लुभाने का केन्द्र के अलावा कंक्रीट का जंजाल बन चुका है। इस जंजाल में अत्यधिक भीड़ के कारण सड़कें जाम होने लगी हैं। हाल यह है कि ज्योलीकोट से ही वाहनों की कतार लग जाती है और नैनीताल आने तक वाहन रेंगते रहते हैं। शहर में अथाह भीड़ से बड़े-बुजुर्गों को चलने में दिक्कत होने लगी है।

अच्छी बात है शहर को संवारा जाए लेकिन इसके लिये सबसे ज्यादा जरूरी है नैनी झील स्वच्छ रहे, इसमें किसी प्रकार की गन्दगी या नालियों का पानी न छोड़ा जाए। रही बात तल्लीताल डांट पर गांधी जी की मूर्ति की तो वह एक पहचान सी बन चुकी है दुनिया में। शायद इसी लिये शहर के बुद्धिजीवियों ने हस्तक्षेप करना शुरू किया था। इसके बाद अन्य संगठन और राजनीतिक दल भी इस आन्दोलन में कूद पड़े। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने तो विरोध प्रदर्शन करते हुए कहा कि महात्मा गांधी की प्रतिमा को सड़क किनारे से हटाकर बीच में किया जाने का कोई औचित्य नहीं है। प्रदर्शनकारियों ने तल्लीताल डांठ पर प्रस्तावित पार्किंग पर विरोध जताया। उन्होंने गांधी मूर्ति पास बनाई गई दीवार को ध्वस्त कर दिया।

नैनीताल ही नहीं कोई भी शहर अपनी किसी विशेषता के लिये जाना जाता है, उस खूबी को जानने और देखने के लिये लोग दूर-दूर से आते हैं। पीढ़ियों से जो चीजें लोग देख रहे हैं उन्हें ध्वस्त होते कैसे देख सकते हैं। यही सब नैनीताल का वर्तमान में चल रहा है। शहर संवरे, सबको सूझ रखनी होगी।

## देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

### जलवायु कार्रवाई तेज करें जी20 देश

बाकू। अजरबैजान की राजधानी बाकू में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के वार्षिक जलवायु सम्मेलन सीओपी29 में जारी जलवायु जवाबदेही मैट्रिक्स के अनुसार अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, सऊदी अरब और तुर्किये सहित अधिकांश जी20 सदस्यों को जलवायु कार्रवाई में अहम तेजी लाने की जरूरत है।

### हसीना व अन्य के खिलाफ लिखा पत्र

ढाका। बांग्लादेश अन्तर्राष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण के मुख्य अभियोजक मो0 ताजुल इस्लाम ने पुलिस महानिरीक्षक मो0 मोइनुल इस्लाम को पत्र लिखकर अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना और उनके सहयोगियों के खिलाफ इंटरपोल के माध्यम से रेड नोटिस जारी करवाने के लिये जरूरी कदम उठाने की मांग की है।

### क्रूज मिसाइल का पहला उड़ान परीक्षण

नई दिल्ली। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने एक मोबाइल आर्टिकुलेटेड लॉन्चर से ओडिश के तट पर एकीकृत परीक्षण रेंज चांदीपुर से सतह पर मार करने वाली लम्बी दूरी की क्रूज मिसाइल का पहला उड़ान परीक्षण किया। परीक्षण के दौरान सभी उप-प्रणालियों ने अपेक्षा के अनुसार प्रदर्शन किया और प्राथमिक मिशन उद्देश्यों को पूरा किया।

### भारत व मॉरीशस के जनसंबंध मजबूत होंगे

लखनऊ। मॉरिशस आम चुनाव में परिवर्तनकामी गठबन्धन को ऐतिहासिक जीत पर पूर्व प्रधानमंत्री पॉल रेमण्ड बेरेजर और पूर्व प्रधानमंत्री नवीन रमगुलाम को वरिष्ठ समाजवादी नेता शिवपाल सिंह यादव औश्र समाजवादी चिन्तक दीपक मिश्र ने बधाई दी है। दूरभाष पर बधाई देते हुए कहा कि भारत और मॉरीशस के जन सम्बन्ध और मजबूत होंगे।

### कनाडा घटना में सिखों की बदनामी ठीक नहीं

अमृतसर। गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के वार्षिक चुनाव के बाद अन्तरिम समिति की पहली बैठक में कई प्रमुख मुद्दों और साम्प्रदायिक मामलों पर महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये। एडवोकेट हरजिन्दर सिंह धामी ने कहा कि भारत में हवाई अड्डों पर सिख कर्मचारियों को कृपाण पहनने से रोकना सिखों धार्मिक स्वतंत्रता पर हमला है। कहा कनाडा की घटना के मामलों में सिखों को बदनाम करना ठीक नहीं है। शीघ्र ही शिरोमणि कमेटी का एक शिष्टमण्डल सरकार से वार्ता करने जायेगा।

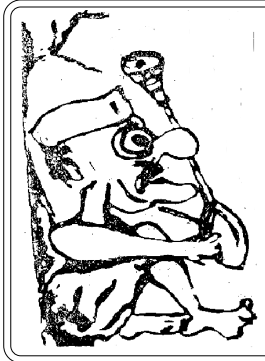

## फसक

# दाज्यू, अब तो घ्वेड़ाघ्वेड़ हो रही ठैरी

## कागज-पत्तर फिट कर दो, कोई नहीं पूछने वाला है बल

दाज्यू, राज्य स्थापना दिवस पर हरिद्वार में तीन लाख दीयों से घाट जगमग हुए तो हमें भी बहुत खुशी हुई लेकिन क्या करें अपने इलाके से निकलने वाली नदी के आस-पास खुदान और सुतान हो रहा है बल। घाट में भी अतिक्रमण के लिये तम्बू लग चुके हैं। दाज्यू, किसको क्या कहा जाए? पटरी पार वाले डिग्री कालेज में लगातार जाँच हो रही है लेकिन काला टीका लगा हुआ है बल। शराफत मियाँ भी कालेज की हालत देखकर दु:खी हैं। कह रहे थे- 'जमाने के हजारों रंग देखे लेकिन इतना बेहुदा मजाक यहीं हो रहा है। इज्जत बचाना कठिन हो रिया है।'

दाज्यू, राजकाज आप सब जानने ही वाले हुए। अब तो घ्वेड़ाघ्वेड़ हो रही ठैरी। उत्तराखण्ड की बुनियाद रखने वाले पहले ही रख चुके, अब टार्च लेकर रास्ता दिखाने वाला चाहिये। बबलू बता रहा था- 'बलात्कारी सदुवा दूसरी मंजिल में खड़े होकर पेशाब करने लगा है। नदी किनारे वाले मोहल्ले को रौंदने के लिये कार भी रखी है। आय से ज्यादा नगद की ठगी बहुत की है।' दाज्यू, कागज-पत्तर फिट कर दो, कोई पूछने वाला नहीं है बल। सदुवा ने अपना आधार कार्ड सहित सारे कागजात बनवा चुका है। कह रहा था वह खतरनाक कनपुरिया है। दाज्यू, बिकने बिकाने की पूछो मत। फिल्म स्टार मनोज बाजपेई के पर बैकडोर से जमीन रजिस्ट्री हो गई बल। कह रहे हैं लमगड़ा विकास खण्ड के कपकोट गाँव में लगभग 15 नाली जमीन खरीदी थी। ध्यान केन्द्र के नाम पर जमीन हुई लेकिन अब जाँच होनी है। सब कागज-पत्तर की सटर-पटर ठैरी। अल्मोड़ा में प्रशासन ने बीते 20 साल में भूमि खरीदने वाले लोगों की तलाश की तो पता चला कि पटना, दिल्ली, हरियाणा, नोएडा व अन्य जगह के धनाड्य लोगों ने कटारमल, बिनसर, शीतलाखेत में कई कामों के नाम पर एकमुश्त करोड़ों की जमीन खरीद ली।

जसपुर में महिला की इंस्टाग्राम आईडी हैक कर कांस्टेबल ब्लैकमेल कर रहा था बल। दाज्यू, मामले की जाँच चल रही है। पन्तनगर विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्राध्यापक डॉ.सत्य कुमर को निलम्बित कर दिया गया है। छात्राओं ने उन पर छेड़छाड़ के आरोप लगाये थे।

जिधर देखो घ्वेड़ाघ्वेड़ हो रही है। छात्र संघ चुनाव को लेकर सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में कुलसचिव पर जोर-जोर से भड़क रहे छात्र नेता का वीडियो वायरल हो रहा है। दाज्यू, गुरुजनों का गोबर बना दिया है बल। संस्कार और गुरु-शिष्य परम्परा सब पुन्तरे में बांध कर रख दिया है। जुवा छात्र नेता के झन्नाकेदार बोल के बाद विश्वविद्यालय के परिसर के डीएसडब्ल्यू ने इस्तीफा दे दिया। दाज्यू, विश्वविद्यालय हों या कालेज दंगल ही दंगल होने लगा है। इस बीच हाईकोर्ट में छात्रसंघ चुनाव को लेकर याचिका की सुनवाई में कोर्ट ने कहा- 'शासनादेश और लिंगदोह कमेटी की सिफारिशों में अन्तर बताएं'। दाज्यू, बालक जिद कर रहे हैं चुनाव की और शासन-प्रशासन जान चुका है कि चुनाव कराना मतलब बहुत उलझन है। वैसे ही पढ़ाई-लिखाई का साल चौपट हो रहा है। कोई किसी तरह का मौका नहीं छोड़ना चाहता है। काशीपुर में एक महिला की एफडी पर साइबर ठग ने दस लाख का लोन ले लिया बल। पीड़ित की रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर जाँच शुरू हो गई है। जी.बी.पन्त इंजीनियरिंग कालेज घुड़दौड़ी के सिविल विभाग के विभागाध्यक्ष भीष्म सिंह खाती ने संस्थान के प्रभारी निदेशक बी.एन.काला पर निर्माण के भुगतान के लिये अनुचित दबाव बनाने का आरोप लगाया है। अब यहाँ भी निर्माण कार्यों की जाँच होनी है।

दाज्यू, लोहाघाट के विधायक खुशाल सिंह के भाई से ठगी करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। सीमेन्ट खरीद के नाम पर ठगी हुई थी बल। डीएसबी परिसर नैनीताल में छात्रा ने एक प्रोफेसर पर अभद्रता का आरोप लगाते हुए हंगामा कर दिया। दाज्यू, तभी तो कह रहे हैं कि घ्वेड़ाघ्वेड़ हो रही है। किसी से कुछ कहना भारी हो चुका है। प्रोफेसर का कहना है- 'आन्तरिक परीक्षा नहीं देने पर सख्ती बरती तो छात्रा की ओर से अभद्रता के आरोप लगाए गए।' दाज्यू, इन हालातों में सही को गलत और गलत को सही कुछ समझ आना कठिन हो जाता है। थलीसैंण के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक को नशे में गाली-गलौज करने पर निलम्बित किया गया है। हल्द्वानी के दमुवाढूंगा में युवतियों से छेड़छाड़ के विरोध में दो पक्षों में लोड़यौव हुई बल। पत्थरबाजी में चोट-पटक भी लगी। धो-धो इज्जत बचानी हो रही है दाज्यू जमाने में।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

## कभी ऊनी कारोबार..

प्रथम पृष्ठ का शेष

धारचूला के व्यापारियों का बोलबाला रहता था। इसके अतिरिक्त अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम इस मेले में आयोजित किया जाता है आज हमारे प्रदेश के मुखिया श्री पुष्कर सिंह धामी मुख्यमंत्री मुख्य अतिथि के रूप में आए थे और उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कई विकास कार्यों के बारे में घोषणा की परन्तु उनके मुख से जोहार घाटी के 14 राज्यों से सीमान्त गाँव के नाम उनके मुखारविंद से नहीं निकला और ना ही विकास से सम्बन्धित योजनाओं की घोषणा किया जो एक चिन्ता का विषय है। दु:ख का भी विषय है यह हमेशा हमारे क्षेत्र के लोगों के साथ सौतेला व्यवहार और अनदेखी करते आ रहे हैं। कई विकास कार्यों के लिए मल्ला जोहार विकास समिति लगातार प्रयत्न करते आ रही है जो की पेंडिंग फाइलों में उत्तराखण्ड सरकार देहरादून के अधिकारियों टेबल में धूल खा रही है। इस प्रकार की सौतेला व्यवहार और अनदेखी की हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं परन्तु वर्तमान सरकार के सामने यह सब चीज हो रही है। मोटर सड़क का निर्माण जिस गति से हो रही है वह जग जाहिर है इसके अतिरिक्त पैदल सड़क रास्ते में आने वाले नदी नालों के ऊपर पुल का निर्माण भी नहीं किया जा रहा है और पैदल सड़क की भी दयनीय स्थिति बनी हुई है कोई देखने वाला है ही नहीं। मर्तोली से लेकर गोरी नदी के ऊपर झूला पुल निर्माण टोला गाँव को सम्पर्क स्थापित करने हेतु कई सालों से अनुरोध कर रहे हैं परन्तु इसकी भी स्वीकृति प्रदान नहीं की जा रही है। इसके अतिरिक्त घग्घर पाचू माप गोरी नदी के ऊपर झूला पुल निर्माण की भी स्वीकृति नहीं मिल रही है। मैं प्रतिवर्ष अपने पैतृक गाँव मल्ला जोहार सीमान्त क्षेत्र जो भारत तिब्बत चीन सीमा के नजदीक विस्थापित है, जाते रहता हूँ वहाँ की समस्याएं लोगों की कठिनाइयों के बारे में प्रदेश सरकार व केन्द्र सरकार से अनुरोध करते आ रहे हैं परन्तु हमारी समस्याओं का निराकरण कब होगा यह भगवान ही जानता है। इसके अतिरिक्त दूरसंचार की व्यवस्था है, न ही पेयजल की व्यवस्था, न ही स्वास्थ्य सुविधाएं, न ही खाद्यान्न सामग्री समय पूर्व पहुँचाई जाती है। और भी अनेक ज्वलन्त समस्याएं हैं जिनका निराकरण करना अति आवश्यक है इसके लिए हम किसके पास जाएं? माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड सरकार, श्रीमान मुख्य सचिव उत्तराखण्ड शासन, श्रीमान आयुक्त कुमाऊँ मण्डल नैनीताल, श्रीमान अध्यक्ष जनजाति आयोग देहरादून, श्रीमान जिलाधिकारी महोदय पिथौरागढ़, श्रीमान उप जिलाधिकारी मुनस्यारी सभी ने इन गम्भीर मसलों पर कार्रवाई करनी चाहिये।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सत्य कथा

# साधारण मजदूर नरसिंह की भीष्म प्रतीज्ञा

**जीवन-जगत में बहुत से लोग हमारे आस-पास होते हुए भी सिमटे रहते हैं जबकि कुछ जीवनचक्र में अनिवार्य अंग से दिखाई देते हैं। ऐसे लोगों का अपनापन सच्चा होता है, इसकी परख होनी चाहिये। इनकी कार्य शैली भीष्मप्रतिज्ञा सी लगती है और अपनत्व जीवन का संगीत सा है। ऐसे ही अपनत्व लिये हुए साधारण से मजदूर नर सिंह की मार्मिक कथा को सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री एल. एस. खाती द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। नर सिंह ने 16 साल की उम्र में लम्बे समय तक जिस प्रकार से अपनी प्रतिज्ञा को निभाया उसके गवाह सेनि. प्रधानाचार्य रमेश चन्द्र शर्मा भी हैं। थल में लम्बे सेय तक सरकारी सेवा में रहे श्री शर्मा ने साहित्यक दृष्टि से नर दा की पूरी दिनचर्या को देखा है श्री खाती द्वारा उनको लेकर लिखी गई सत्य कथा से थल के पुराने दिनों का स्मरण भी किया है।**

**लक्ष्मण सिंह खाती**

शरहद में दुश्मनों से लोहा लेने वाला सैनिक फतह करके लौटे या इसी जज्बे के साथ शहादद दे दे, वो हमेशा देश की सरजमीं के लिए परम आदरणीय होता है। मातृभूमि की अस्मिता के लिए लड़ना वास्तव में बड़ी दिलेरी का काम है। हम सब देशवासी रणबाँकरों की ही बदौलत शुकून व चैन से अपने घरों में रहते हैं और दिल से उनके प्रति कृतिज्ञता व्यक्त करते हैं। देश के लिए इतना बड़ा अतुलनीय पुण्य कार्य करना भी हजारों में कुछ को नसीब होता है, क्योंकि हर किरदार हर किसी को नहीं मिल सकता है और यही इस जीवन रूपी रंगमंच का सबसे बड़ा आकर्षण है। हालांकि अन्य भी कई क्षेत्र हैं, जहाँ व्यक्ति अपनी मेहनत व काबिलियत से कीर्तिमान स्थापित करता है और समाज को कुछ न कुछ देता है। जिसके बदले में समाज उन्हें एक नाम देता है, एक रसूक देता है। जिसे व्यक्ति अपनी वास्तविक कमाई समझता है क्योंकि एक आम आदमी रोजी-रोटी के साथ-साथ समाज में नाम और गरिमामय स्थान हासिल करने के लिए भी छटपटाता ही रहता है। किसी भी क्षेत्र में डंका बजाने या चमत्कार कर दिखाने की जड़ में कहीं न कहीं पहले उस कार्य के प्रति शौक जैसी बात प्रतीत होती है, धीरे-धीरे उसी को आजीविका का साधन भी बना लेना और फिर किस्मत चल पड़ी तो करिश्माई परिणामों को अंजाम देने लगता है आदमी, छू लेता है बुलन्दियां।

कुदरत की कायनात में कुछ नामुराद ऐसे भी हैं जो खुद से ही लड़ते-लड़ते जिन्दगी पूरी करके भी गुमनामी में ही जीते हैं और यों ही चुपचाप शरक लेते हैं दुनिया से, बिना आहट किये। बस दो जून की रोटी हासिल करना ही जिन्दगी की असली जंग है उनके लिए। उदर पूर्ति ही सबसे बड़ी फतह और भुखमरी ही उनकी जिन्दगी की शिकस्त है, लेकिन इतना तय है कि व्यक्ति किसी भी मजहब, किसी भी मुल्क या समाज, किसी भी तपके का हो खुद्दारी-खुदगर्जी, बेईमानी और ईमानदारी जैसे गुण अवगुण ताउम्र उसके दामन में चिपके रहते हैं, उसी से उसकी इंसानियत का स्तर आँका जाता है। वही उसकी वास्तविक निधि होती है। दुनिया किरदार के लिए रोती है मगर किरदार को नसीब मानकर पूरी सिद्दत के साथ उसे निभाना ही मेरी समझ में उत्कृष्ट इंसान होने प्रमाण होना चाहिये। ऐसे हो प्रमाण्य के एक असली हस्ताक्षर को मैं पिछले चार दशकों से जानता हूँ, जिन्हें थल (पिथौरागढ़) की सुरम्य घाटी में 'नर दा' के नाम से जाना जाता है। नर दा वास्तव में मेहनत-मसक्कत की सच्ची तस्वीर है जिसके अन्दर खुद्दारी व आत्म सम्मान कल्पना से ज्यादा भरा है। एक 15-20 वर्ष का शारीरिक रूप से अति कमजोर युवक, महज पारिवारिक उपेक्षा से घर ही क्या, देश छोड़ का फैसला करता देता है और उम्र भर अपने इस फैसले पर अडिग रहता है।

बकौल नर दा- ग्राम बुंगल देवलीकोट जिला बजाँग नेपाल में एक गरीब परिवार में जन्मे चार भाई व एक बहिन में सबसे छोटे थे। बचपन से पेट दर्द की शिकायत रहती थी, उचित चिकित्सकीय व्यवस्था न हो पाने के कारण कोई इलाज नहीं हो सका और फिर घर में भाई लोग बार-बार ताने मारते 'खाना तो खाता ही है काम करने को कहता है पेट दर्द है'। यही सिलसिला चलता रहा उसे साथ लगातार सुन-सुनकर। नद दा कहते हैं- 'मैं तंग आ गया साब'। सभी की कचकच सुनकर और दिन टूट गया नर दा के सब्र का बांध और बोल दिया परिवार को 'मैं जा रहा हूँ तुम लोगों से दूर। तुम लोग परेशान हो मुझे देखकर, मैं भी नहीं रह सकता यहाँ और सुन लो फिर कभी लौटकर नहीं आऊँगा।' बस हो गया नर दा सफर शुरू। उस समय उनकी उम्र लगभग 15-20 वर्ष की रही होगी। वर्ष, महिना व तारीख नर दा स्पष्ट नहीं कर पाते हैं, इसलिए एकदम ठीक बता पान कठिन है। नर दा बजांग के अकेले ही कुर्ता पैजामा व हवाई चप्पल में झूलाघाट होते हुए कई दिनों में पिथौरागढ़ पहुँचे। पिथौरागढ़ पहुँचते-पहुँचते पेट की हालत बहुत खराब हो चुकी थी। आगे बताते हैं कि 2-3 दिन तक पेट से बहुत परेशान हो गया, न खाना न पीना, बस किसी तरह दिन गुजार लेना और रात भर एक दुकान के बरामदे में करवटें बदलते रहना। किसी तरह दो-तीन दिन बाद पेट से राहत मिलते ही नौकरी की तलाश तब किसी होटल में बर्तन धोने का काम मिल गया। कुछ दिन पिथौरागढ़ में बिताए फिर काम की तलाश में लोहाघाट होते हुए देवीधुरा, जहाँ दो महिना काम किया। उसके बाद लगभग डेढ़ वर्ष तक टनकपुर में होटल की नौकरी की। फिर वहाँ भी मन नहीं लगा, दोबारा लोहाघाट के गाँवों का रूख किया। एक लम्बा अरसा उधर भी बीता, पुनः पिथौरागढ़ की तरफ चल दिया और सीधे थल होते हुए डीडीहाट पहुँच गए। वहाँ पूछताछ करने पर नर दा को पता चला कि किसी ठेकेदार का थल में लम्बा काम चल रहा है। वहाँ नर दा को काम मिल सकता है, ठेकेदार से सम्पर्क हुआ तो उसने शारीरिक कमजोरी का हवाला देते हुए उन्हें राजकीय इण्टर कालेज थल के स्टाफ क्वाटर्स के निर्माण कार्य में तराई आदि के छोटे-मोटे काम में लगा दिया। मेहनत-मजदूरी कुछ भी तय नहीं की गई। निर्माण कार्य पूरा होने के बावजूद विभाग को सुपुर्द होने में समय लग ही गया। इस दौरान भवनों की चौकीदारी आदि कार्य किया और वहाँ से पूर्ण रूप से फरोक्त होने पर नर दा कहते हैं- 'हिसाब भी सब ऐसा ही रहा कुछ नहीं मिला'। उसके बाद शुरू हुआ नर दा का असली व्यवसाय जो कि शारीरिक क्षमता की अन्तिम छोर तक अविरल चलते ही रहा तो है 'बोझा ढोना'। बताते हैं यहाँ किसी से मिलना जुलना नहीं रहा। तभी एक शाम को थल पुल के पास एक नेपाली ठिकाना ढूंढ रहा था तो नर दा ने उससे उसके गाँव के बारे पूछा। उसने बुँगला देवलीकोट कहा, तब उसने बताया कि वह भी वहीं का है, फिर आगे उसने पूछा कि उसके चाचा का एक लड़का बहुत पहले आया था, बहुत कमजोर था, कभी सुना था कि थल में रहता था। होगा या मर चुका होगा। तब नर दा ने कहा- 'मैं ही हूँ वो'। उसे फिर अपने कमरे में ले गया और दो दिन तक अपने पास रखा। चचेरे भाई ने बहुत जोर दिया घर चलने को, मगर नर दा की भी भीष्म प्रतिज्ञा अटल रही। कहते हैं- 'क्या करना साब अब कट ही गया है' जो हो गया सो हो गया। एक बार नर दा से पूछा था शादी क्यों नहीं की। उस पर भी वही सादगी 'बोझा ढोने से ही फुरसत नहीं मिली साब'। जहाँ तक उस व्यक्ति के काम के बारे में मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है, जैसा कि एक आम प्रवृत्ति उस तरह के लोगों में पायी जाती है कि जितना भी मेहनताना दो कुछ और बढ़ाकर देने की पेशकश करते ही हैं किन्तु अगले की मानसिकता बड़ी सपाट सी लगी। कभी भी ना नुकुर या कुछ और बढ़ाने वाली जैसी बात नहीं सुनने को मिली। एक खास बात यह कि जितना भी टटोल पाया हूँ मैं उस व्यक्ति को उसमें घर छोड़ने और फिर कभी लौटकर न जाने या ऐसा फैसला ले लेने का कतई भी रंज या पछतावा जैसा उसके दिल में है ऐसा प्रतीत नहीं होता।

हालांकि इंसान कितनी भी कठोर प्रकृति का क्यों न हो, अपनों से बिछोह का दर्द तो उसे सालता ही होगा, क्योंकि मैं समझता हूँ ईश्वर ने जब भी किसी जीव की संरचना की होगी तो जान के साथ-साथ उसमें प्यार और नफरत दो पूरक भाव अवश्य डाले होंगे, जिसके बिना हर जीव अधूरा ही होता है। तब कैसे हो सकता है कि नर दा का मन कभी लौटा नहीं होगा। बुँगल देवकोटो की ओर। वैसे भी ढलती उम्र के साथ-साथ अतीत की कड़वी मीठी यादों से सिंचित मोह की सदाबहार बेल और भी पुष्पित

शेष पृष्ठ 5 पर

## ज्योतिष की बातें- 205

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त किसी भी अन्य ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह शनि मूल त्रिकोणराशि कुम्भ में, सूर्य मित्रराशि वृश्चिक में, बुध व शुक्र समराशि वृश्चिक व धनु में क्रमशः, गुरु शत्रुराशि वृषभ में, मंगल नीचराशि कर्क में तथा चन्द्रमा इस सप्ताह कन्या, तुला व वृश्चिक राशि में क्रमशः गोचर करेंगे ।

26 नवम्बर 2024 को बुध वृश्चिक राशि में वक्री हो जाएगा । वहाँ 21 दिनों तक वक्री रहेगा। इसी मध्य 30 नवम्बर 2024 से 13 दिनों के लिए बुध अस्त भी रहेगा। बुध के अस्त एवं वक्री होने का कोइ विशेष प्रभाव जातकों पर नहीं पड़ता है।

इस स्तम्भ में वर्णित ग्रहों का गोचरफल स्थूल रूप से ही सही हो सकता है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म फलादेश उसकी जन्म कुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

**-ओंकार नाथ कोष्टा**
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

## सम्यक् विचार- 96

### मन्दिर रूपी व्यापार

हमारे मुहल्ले में लगभग तीस वर्ष पहले एक मन्दिर बना भगवान शंकर का। कुछ समय बाद लोगों की डिमाण्ड पर उसमें राम दरबार भी स्थापित कर दिया गया। फिर कुछ समय बाद दुर्गा माता की मूर्ति भी मन्दिर परिसर में स्थापित कर दी गई। फिर कुछ लोगों की डिमाण्ड पर शनिदेव की भी मूर्ति वहाँ पर स्थापित कर दी गई। कुछ समय बाद हनुमान जी की भी दक्षिणमुखी मूर्ति मन्दिर में स्थापित कर दी गई और अब तो साईं बाबा की मूर्ति भी वहाँ पर लगा दी गई है। अब मोहल्ले वालों को कहीं और नहीं जाना पड़ता।

कई शताब्दियों तक वैष्णी देवी का मन्दिर केवल जम्मू में रहा और अब लगभग सभी बड़े शहरों में वैष्णी देवी के मन्दिर स्थापित हो चुके हैं। पहले केवल एक ही स्थान शिंगणापुर में शनि महाराज का मन्दिर था अब पूरे देश में सभी शहरों में सभी मोहल्ले में लाखों की संख्या में शनि मन्दिर स्थापित हो चुके हैं। पहले गोलू देवता के मन्दिर उत्तराखण्ड के चम्पावत और अल्मोड़ा में ही थे, अब कुमाऊँ के सभी शहरों में जगह-जगह में गोलू देवता के मन्दिर स्थापित हो चुके हैं। पहले स्वामी समर्थ का मन्दिर महाराष्ट्र के अक्कलकोट में ही था और अब सभी शहरों में, गली-गली में और चौराहे-चौराहे पर स्वामी समर्थ की मूर्तियाँ स्थापित कर दी गई हैं। पहले साईं बाबा का मन्दिर केवल शिर्डी में ही था। अब पूरे देश में प्रत्येक शहर में साईं बाबा के हजारों मन्दिर बन चुके हैं बल्कि लगभग सभी प्राचीन मन्दिरों में भी साईं बाबा को बैठा दिया गया है। अब सौ मीटर चलने में ही कई बार सर झुकाना पड़ता है अन्यथा लगता है कि भगवान का अपमान हो गया।

भगवान के मन्दिर के अतिरिक्त अब साधु सन्तों और महापुरुषों के भी मन्दिर बहुतायत में बनने लगे हैं। क्या यह उचित है? कहीं ये पाखण्ड तो नहीं? कहीं हम प्रेत पूजा तो नहीं करने लगे? सनातन धर्मावलम्बियों को विचार करना चाहिए ।

**-सरल**

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

## शर्तों का उल्लंघन पर भूमि जब्त होगी

नैनीताल। कैंचीधाम तहसील के अन्तर्गत विभिन्न ग्रामों में 6 बाहरी व्यक्तियों को 210 नाली भूमि में शर्तों के अनुरूप कार्य न करना भारी पड़ा है। एसडीएम बीसी पन्त की ओर से गठित टीम की जांच के बाद खरीदी गई जमीन को राज्य सरकार में निहित करने की संस्तुति की गई है।

## पहला डिजिटल कोर्ट बनेगा

नैनीताल। जिला न्यायालय को देश का पहला पेपरलेस कोर्ट बनाने की शुरुआत हुई है। न्यायाधीश न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल ने डिजिटलाइजेशन केन्द्र का उद्घाटन किया। अब शीघ्र ही नैनीताल जिला न्यायालय पूरी तरह से देश का पहला पेपरलेस कोर्ट बन जाएगा।

## देवीधुरा में भव्य दीपोत्सव

चम्पावत। माँ बाराही धाम देवीधुरा में 5 दिवसीय दीपोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। शोभा यात्रा में शानदार झाँकियों का प्रदर्शन देखने को मिला। समिति के अध्यक्ष ईश्वर सिंह बिष्ट ने अतिथियों का स्वागत किया। विक्रम कठायत के संचालन में हुए कार्यक्रम में मेला समिति के अध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट, ब्लाक प्रमुख सुमनलता, कीर्ति बल्ल्भ जोशी, राजेश गहरवाल बिष्ट आदि मौजूद थे।

## मधुमेह से बचाता है व्यायाम : डॉ. दुग्ताल

नैनीताल। बीडी पाण्डे चिकित्सालय में जागरूकता कार्यम में वरिष्ठ फिजिशियन डॉ.एम.एस.दुग्ताल ने लोगों को बताया कि शुगर (मधुमेह) एक गम्भीर बीमारी है। इससे बचने के लिये व्यायाम बेहतर तरीका है। खानपान और व्यायाम के प्रति जागरूक रहना चाहिये।

## जलभराव से राहत के लिये योजना

हल्द्वानी। मानसून सीज में पर्वतीय क्षेत्र और हल्द्वानी शहर का पानी जिस प्रकार तबाही मचाने लगा है उसे देखते हुए यूयूएसडीए ने नैनीताल रोड और कालाढूंगी रोड के पानी की निकासी के लिये 134 करोड़ रुपये की योजना बनाई है। शासन स्तर पर मंजूरी मिलते ही इसके लिये टेंडर जारी हो जाएंगे। नगर निगम को एशियन डेवलपमेंट बैंक की ओर से 2200 करोड़ का ऋण मिला है इस बजट से पेयजल लाइन, सीवर, सड़क बहुद्देशीय भवन, ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम, ड्रेनेज का कार्य होना है।

## ई-केवाईसी कराना जरूरी है

हल्द्वानी। घरेलू रसोई उपभोक्ताओं के लिये ई-केवाईसी अनिवार्य है। इसके बिना इण्डेन गैस कनेक्शन बन्द कर दिया जायेगा। गैस सर्विस प्रबन्धक ने ग्राहकों से ई-केवाईसी कराने का आग्रह किया है। शहर के उपभोक्ता सरस बाजार में यह करवा सकते हैं।

# ध्वस्तीकरण व सत्यापन के बाद होगा दुकानों का आवंटन

हल्द्वानी। शहर के बीच होकर जाने वाली सड़कों के चौड़ीकरण, चौराहों के फैलाव व सुन्दरीकरण की कार्रवाई में होने वाली टूटफूट को लेकर लगातार हलचल मची हुई है। नगर निगम में नैनीताल रोड चौड़ीकरण की जद में आ रही दुकानों के आवंटन के सम्बन्ध में बैठक हुई। जिसमें आवंटन के लिये कमेटी बनाई गई है। कमेटी में मुख्य नगर आयुक्त विशाल मिश्रा, सिटी मजिस्ट्रेट ए.पी. बाजपेयी, सहायक नगर आयुक्त गणेश भट्ट और नगर निगम कर अधीक्षक महेश पाठक शामिल हैं।

नगर निगम प्रशासक कार्यालय में हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि सत्यापन करने के बाद ही दुकानों का आवंटन किया जायेगा। नैनीताल रोड चौड़ीकरण की जद में सौ से अधिक दुकानें ध्वस्त हो रही हैं जिसमें नगर निगम के स्वामित्व वाली दुकानें भी शामिल हैं। नगर निगम इन दुकानों के संचालकों मंगल पड़ाव में दुकानें आवंटित करने जा रही है। दुकानों के आवंटन से पहले सत्यापन किया जा रहा है। नगर निगम की टीम से सत्यापन प्रक्रिया शुरू कर दी है।

सहायक नगर आयुक्त गणेश भट्ट ने बताया कि चौड़ीकरण का मामला वर्तमान में हाईकोर्ट में चल रहा है लेकिन प्रभावित दुकानदारों में से नगर निगम के स्वामित्व वाली दुकानों के संचालकों ने याचिका वापस ले ली है। जिस पर कोर्ट के आदेशानुसार इन दुकान संचालकों को एक माह के भीतर मंगल पड़ाव में बने टिनशेड में नई दुकानें आवंटित की जाएंगी जिसके बाद ही चौड़ीकरण में आ रही दुकानों को ध्वस्त किया जाएगा।

# बकनोट इतिहास-वंशावली का विमोचन

गंगोलीहाट। पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी ने बनकोट के रामलीला मैदान में बनकोट का इतिहास व वंशावली पुस्तिका विमोचन किया। उन्होंने प्रकाशन के लिये चंचल सिंह बनकोटी व उनके साथियों की सराहना की। पूर्व सीएम के स्वागत समारोह के बाद ग्रामीणों ने दस ग्राम सभाओं को बागेश्वर जिले में मिलाने की मांग रखी। इस अवसर पर गंगोलीहाट के विधायक फकीर राम टम्टा, पुस्तक सम्पादक चंचल बनकोटी, अर्जुन बनकोटी, भाजपा प्रदेश मंत्री मीना गंगोला, जिला पंचायत सदस्य गणाई चन्दन बाणी, दीपक मेहता, जवाहर सिंह, राजेन्द्र सिंह, उम्मेद सिंह, शिवनाथ सिंह, गोविन्द सिंह, देवेन्द्र सिंह, बागेश्वर बार एसोशिएशन अध्यक्ष गोविन्द सिंह भण्डारी, शेर सिंह धपोला, भुवन चन्द्र पन्त, सुरेश डसीला मौजूद थे।

# 72वां गौचर मेले की धूम मची है

चमोली। सुप्रसिद्ध गौचर मेले की धूम मची हुई है। 72वें राजकीय औद्योगिक विकास एवं सांस्कृतिक मेले का उद्घाटन सीएम पुष्कर सिंह धामी ने करते हुए 4. 93 करोड़ की लागत से नवनिर्मित उप सम्भागीय परिवहन कार्यालय भवन का का लोकार्पण किया। सीएम ने विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि गौचर मेला संस्कृति, बाजार तथा उद्योग तीनों के समन्वय के कारण एक प्रसिद्ध राजकीय मेला है। मेले में पत्रकार क्रान्ति भट्ट को पं.गोविन्द बल्लभ नौटियाल स्मृति सम्मान और गुरू राम राय एजुकेशन मिशन देहरादून को शिक्षा और साहित्य प्रसार के लिये पं. महेशानन्द नौटियाल स्मृति सम्मान दिया गया। मेले का शुभारम्भ ईष्ट रावल देवता की पूजा और प्रभातफेरी से से हुआ। मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ही बाजार सजा हुआ है।

# काठगोदाम से कैंची तक शटल सेवा

हल्द्वानी। कुमाऊँ मोटर ओनर्स लि. ने काठगोदाम से से कैंची धाम तक शटल बस सेवा की तैयारी शुरू की है इससे यात्रियों को लाभ मिलेगा और सड़क में लगने वाले जाम से राहत भी होगी।

अवकाश पर ट्रेनों से आने वाले यात्रियों को काठगोदाम रेलवे स्टेशन से ही शटल सेवा मिलने पर काफी आराम होगा। सम्भागीय परिवहन अधिकारी ने केमू प्रबन्धक को इसके लिये पत्र लिखा है। इसमें बताया कि अवकाश और वीकेंड पर कैंची धाम जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने लगी है। दूरदराज से आने वाले श्रद्धालु कोठगोदाम रेलवे स्टेशन पर उतरकर 6 किमी दूर स्थित केमू स्टेशन जाते हैं। इसमें समय समय के साथ अन्य परेशानी होती है। ऐसे में यदि काठगोदाम से कैंची के लिये शटल बस सेवा शुरू हो जाए तो काफी राहत होगी। पत्र में यह भी स्पष्ट किया गया है कि बस पर साफ-साफ रूप से शटल सेवा कैंची धाम लिखा जाए। बताते चलें पिछले दो साल से कैंची में अत्यधिक भीड़ से जाम की समस्या के अलावा बाहर से आने वाले यात्रियों के कारण काठगोदाम से ही यातायात व्यवस्था चरमराने लगी है।

# टनकपुर-बोगश्वर रेल लाइन पर सर्वे

टनकपुर। टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन पर अब तीसरी बार सर्वे का काम शुरू हो चुका है। स्काईलार्क इंजीनियरिंग संस्था ने चिन्हित स्थान पर पीलर लगाने का कार्य किया है।

बताते चलें कि 142 साल में तीसरी बार इस लाइन का सर्वे हो रहा है। 1882 में अंग्रेजों ने पहल बार रेल लाइन का सर्वे कराया था। इसके बाद रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव के कार्यकाल में भी सर्वे हुआ था। इसके बाद मामला ठण्डा पड़ गया लेकिन लोग रेल लाइन को लेकर लगातार आन्दोलन करते रहे हैं। बताया जा रहा है कि 169999 किमी लम्बी लाइन की सर्वे की अनुमानित लागत 44140 करोड़ रुपये है। इस समय सर्वे में पिलर लगाने के साथ ही भूमि अधिग्रहण की तैयारी है। रेलवे के जन सम्पर्क अधिकारी राजेन्द्र सिंह के अनुसार नोडल कार्यदायी संस्था इस कार्य को कर रही है।

# स्व.धौनी की जीवनी को पाठ्यक्रम हो

अल्मोड़ा। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. राम सिंह धौनी की 94वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित सभा में वक्ताओं ने स्व. धौनी की जीवनी पाठ्यक्रम में शामिल करने और अल्मोड़ा-पौधार सड़क को स्व. धौनी मोटर मार्ग किए जाने की मांग की।

धारानौला स्थित जिला पंचायत परिसर में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित जनों ने स्व.धौनी की मूर्ति में माल्यार्पण किया। मुख्य अतिथि निवर्तमान पालिकाध्यक्ष प्रकाश जोशी ने कहा कि स्व.धौनी ने देश की आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ शिक्षा की अलख जगाई। इस दौरान सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया गया कि स्व.धौनी की जीवनी को पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रयास किया जाए। इसके अलावा उनकी जयन्ती को भव्य बनाने का निर्णय लिया गया। इस दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता व समिति के संरक्षक गोविन्द लाल वर्मा, अध्यक्ष राजेन्द्र रावत, गाविन्द मेहरा, अमरनाथ सिंह रजवार, लोकमणि भट्ट, विपिन जोशी, आनन्द बगड्वाल आदि थे।

## अस्कोट में मल्लिकार्जुन महोत्सव

अस्कोट। स्थानीय आईटीआई मैदान में मल्लिकार्जुन महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा खेलकूद प्रतियोगिताओं में स्थानीय कलाकारों व स्कूल के बच्चों ने भागीदारी की। समिति के अध्यक्ष महेश पाल ने आयोजन के लिये सभी का आभार व्यक्त किया है।

## गर्खा महोत्सव पर नेपाली धुनों से समा

अस्कोट। तीन दिवसीय गर्खा महोत्सव के समापन पर नेपाली संगीत धुनों ने समा बांधा। रामचन्द्र काफले और गायिका जूना रिजल्स ने अपनी प्रस्तुतियों से लोगों को लुभाया। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक विशन सिंह चुफाल ने आयोजन की सराहना की। महोत्सव समिति के अध्यक्ष सुनील कन्याल, संयोजक महिमन कन्याल ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर अजय अवस्थी, मनोज लुण्ठी, गोपाल खोलिया, विक्की जेठी, पूरन पन्त आदि थे।

## परिक्रमा

## अमर शहीद सैनिक मेले की तैयारियां

थराली। देवाल ब्लाक के सैनिक बाहुल्य गाँव सवाड़ में आगामी 2 दिसम्बर से आयोजित होने वाले 17वीं अमर शहीद सैनिक मेले की तैयारियां होने लगी हैं। कमेटी के अध्यक्ष आलम सिंह बिष्ट की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में पिछले मेले के आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया और इस बार मेले को और भव्य बनाने का निर्णय लिया।

## सख्त भू-कानून हो वर्ना आन्दोलन होगा

नई टिहरी। उत्तराखण्ड संयुक्त संघर्ष समिति ने चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि प्रदेश सरकार जल्दी ही सख्त भू कानून व मूल निवास लागू करने को लेकर ठोस कदम नहीं उठाती है तो आन्दोलन की रणनीति बनाई जायेगी। समिति के पदाधिकारियों ने ठोस कदम न उठाने पर आन्दोलन के साथ लोगों को जागरूक करने की बात कही। निर्माण कार्यों में स्थानीय को लाभ को भी कहा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

## साधारण मजदूर.....

पृष्ठ 3 का शेष

पल्लवित होती जाती है। अपनी माँ-माटी व अपने मानुस तो कदम-दर-कदम दिलो-दिमाग में दस्तक देते ही रहते हैं, उन्हें एक ही चुटकी में फर्र से अपने ख्यालों से ही रूखसत कर देना हो तो मैं समझता हूँ तलवार की धार पर नंगे पैर चलकर एक भी बूंद खून न निकलने जैसा ही है। विशेषकर उस व्यक्ति के लिये जिसकी जिन्दगी में मीलों तक खामोशी और वर्षों की परिपक्व तन्हाई हो और उसमें आर्थिक तंगी भी अपना अटूट रिश्ता निभाती रहे। कैसी कशिश में जीता होगा वो इंसान? या मान लें कि उसने सब कुछ बिसरा दिया औश्र बना दिया है दिल को दरिया, जिसमें समा गया होगा सब कुछ। महान अंग्रेजी कवि व नाटककार विलियम शेक्सपियर ने कहा है कि 'प्रत्येक इंसान एक किताब होता है बशर्ते कि आप उसे पढ़ सकें।' लेकिन कुछ किताबों की भाषा इतनी क्लिष्ठ होती है कि उसका सार समझना हर किसी के बूते से बाहर होता है। किस कदर सिकोड़-मोड़ लेता है व्यक्ति अपने आप को? जब हालात माकूल न हों और चीजें बस से बाहर नजर आने लगती हैं। नजरिया बदल जाता है जिन्दगी के प्रति, भावनाओं की भी ऐसी-तैसी कर देता है इंसान खुद ही। ये बात अलग है कि बौद्धिक स्तर के अनुसार सोचने और विचार करने की क्षमता भी अलग-अलग होती है। उसी आधार पर इंसान का सकारात्मक या नकारात्मक पहलुओं की ओर रूझान बढ़ता है। किन्तु एक इंसान के नैसर्गिक गुण-दोष तो हर किसी में विद्यमान हाते ही हैं, एक मजदूर के अन्दर भी जिसने 15-20 वर्ष की उम्र में ही ऐसा निर्णय ले लिया हो, अपने तरीके से सोचने की क्षमता तो होगी ही। वैसे सोचें तो कितनी बड़ी बात है जब कोई अपने अन्दर के ऊफान को जुंवा तक नहीं आने देता है और लौटा देता है उसे लहरों की तरह वापस सागर में ही समा जाने के लिए। एक निरक्षर मजदूर जिसे बुद्धिमान कहना हर किसी के गले नहीं उतरेगा, कहाँ से आयी होगी वो क्षमता? नादानी में लिये गए फैसले को अंजाम तक पहुँचा दिया और न कोई गिला न शिकवा। बस जितनी बार भी पूछो वही चन्द जवाब। जब कि बड़ी-बड़ी हस्तियों को देखा गया है कि कुदेरते ही बहने लगते हैं भावुकता की रौं में। या फिर अपनी सफलता व उपलब्धियों का बखान करते-करते लोग ये पूछना भी भूल जाते हैं कि आप कैसे हैं? और एक नर दा थे कि दूर-दूर तक संजीदगी या सम्वेनशीलता जैसी चीज ही नजर नहीं आती है उनकी बातों में। इसलिए कभी सोचता हूँ कि किस धातु का बना है ये नेपाली, कि पिघलता ही नहीं है? आखिर कुदरत की कारीगरी भी गजब है कि हर हाल में जीने के लिए उसी तरह का हुनर बख्श देती है हर जीव को, ताकि उसके रंगमंच का चरखा चलता रहे और हर जीव अपना तयशुदा किरदार पूरा कर सके। वरना ऊपर वाले का खेल गड़बड़ा जायेगा और थम जायेगा दुनिया का रेला। शायद इसी कायदे के साथ नर दा की भी रचना हुई हो। इसलिये उसे पता है कि ये लोग 'लोग हैं' फरिश्ते नहीं, जो मेरे सारे गम दूर कर देंगे, फिर नाहक ही इन्हें क्यों पता दे दें अपने घावों का। वही तो धरोहर है मेरी उसे ही उडेल के रख दूंगा तो रीता बर्तन हो जाऊँगा मैं। यही खालिश तो है जिससे रूह में गर्मी औरबदन में हरारत है उसकी। यों तो मुफलिसी इस कदर है उसकी जिन्दगी में कि उम्र भर कमर तोड़ मेहनत के बावजूद दो गज नहीं है उसके पास जिसके नीचे वो स्थाई रूप से आराम कर सके। नर दा

### शिक्षा विभाग की तैयारी

# उत्तराखण्ड के सभी स्कूल एक साथ खुलेंगे

देहरादून। उत्तराखण्ड में स्कूली पढ़ाई और अवकाश की समान समय सारणी के लिये शिक्षा विभाग तैयारी कर चुका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों के अनुसार शिक्षा विभाग ने स्कूलों की समय सारणी की जो तैयारी की है उसके अनुसार राज्य के दुर्गम भौगोलिक हालात को ध्यान में रखते हुए गर्मी के अवकाश की अवधि को कम करते हुए 12 दिन के विशेष अवकाश का सत्र प्रावधान किया है। बताया गया है कि नई समय सारणी को अन्तिम रूप देने से पहले सभी स्कूल प्रधानाचार्य, शिक्षकों के साथ ही अभिभावकों और छात्रों से सुझाव लिये जा रहे हैं। महानिदेशक शिक्षा ने सभी सीईओ को सुझाव एकत्र करने के निर्देश दिये हैं।

इस प्रस्ताव में स्कूल को गर्मियों और सर्दियों में स्कूल खुलने की अवधि को स्थायी रूप से सुबह 8.45 बजे करने का और स्कूल में छुट्टी अपराह्न सवा तीन बजे होने का प्रस्ताव है। यानी छात्रा नियमित रूप से साढ़े घण्टे स्कूल में रहेंगे। इसमें 25 मिनट की प्रार्थना सभा और 45 मिनट का इन्टवेल भी शामिल है।

### टकपुर डिग्री कालेज को लगी है नज़र

# लागातार जांच के बाद अब परिणाम की उम्मीद

**रूसा को लेकर हलचल बरकरार, कार्यप्रणाली पर सवाल**

टनकपुर। उत्तराखण्ड उच्चशिक्षा में राजकीय महाविद्यालय टनकपुर सबसे ज्यादा चर्चा में आ चुका है। इसके पीछे मुख्य कारण रूसा का मामला बताया जा रहा है। इसके अलावा सवाल उठ रहे हैं कि कालेज कौन चला रहा है। लगातार जांच के बाद भी आज तक परिणाम न मिलने से पूरा शहर हैरान है और सवाल उठ रहा था कि डिग्री कालेज को किसकी नज़र लग गई। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के विधानसभा क्षेत्र के इस कालेज की गतिविधियों की सारी जानकारी सीएम को भी है और जांच के लिये प्रशासन की ओर टीम को भेजा भी गया। अब उम्मीद परिणाम की उम्मीद जगी है।

बीते दिनों में उच्चशिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक डॉ. राजेन्द्र सिंह भाकुनी, सितारगंज डिग्री कालेज की प्राचार्य डॉ. रेनू रानी बंसल, कपकोट के प्राचार्य डॉ. गिरिजा शंकर यादव की टीम भी जांच के लिये पहुंची और उन्होंने कर्मचारियों से बातचीत करते हुए उनकी परेशानियों को सुना। बताया जा रहा है कि कर्मचारियों ने रोते हुए अपनी पीड़ा बताई और कहा कि प्राचार्य द्वारा उनके साथ भेदभाव किया जा रहा है। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी को उनके कक्ष से हटाकर प्राचार्य द्वारा अलग बैठाये जाने, महिला कर्मचारी को मेडिकल के दौरान जबरन दबाव, उपनल कर्मियों को कर्नल पाण्डे के कहकर नौकरी से बाहर निकलाने सहित कई शिकायतें जांच टीम को सुनाई। इस बीच छात्र नेता राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने जांच टीम से प्राचार्य कक्ष में ही कालेज के हालातों को बताते हुए प्राचार्य पर आरोप लगाया कि वह प्रो.एस.के.कटियार के इशारे पर कालेज चला रही हैं। जांच टीम ने बहुत ही बारीकी से कालेज के हालातों को देखा और भरोसा दिलाया कि न्यायपूर्ण बात होगी। इस बीच कालेज की हलचल सीएम कैम्प कार्यालय से लेकर जिला प्रशासन तक है। रूसा मामला की जड़ भी पकड़ में आ ही जायेगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

सम्पर्क 7351285555

नरेन्द्र सिंह रावत

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by- ( माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर )

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel

Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत

होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

Hayat Paradise

Bus Station

Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

( सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर )

गोदाम- जोहार एसोसिएट्स, बच्चीनगर- १, कमलुवागांजा, हल्द्वानी

मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

MARTOLIA FURNITURE

A unit of Martolia Enterprises

Pilikothi, Haldwani

Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Enjoy Beauty of Himalaya at

MARTOLIA LODGE

Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay

Phone: (05961) 222287

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

इन्द्रा पांगती

सी 85, सेक्टर-एन
अलीगंज कुर्सी रोड
( निकट शक्ति हास्पिटल )
लखनऊ

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी ( नैनीताल ) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी( नैनीताल ) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)